दैनिक जागरण पेज नं० (5)

झाँसी : मूँगफली उत्पादन को हुई कार्यशाला में उपस्थित वैज्ञानिक व अतिथि।

बुन्देलखण्ड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए दिया प्रशिक्षण

झाँसी : बुन्देलखण्ड क्षेत्र में मूँगफली के उत्पादन व प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ाने के लिए एक दिवसीय चिन्तन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कुलपति डॉ. अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी आदि उपस्थित रहे। स्वागत डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी ने किया। प्रशिक्षण में मूँगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यापक रोडमैप विकसित करने पर मन्थन किया गया। निदेशक अनुसन्धान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग पर जोर दिया। नई प्रजातियों को चिह्नित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा। कार्यशाला में निदेशक मूँगफली अनुसन्धान निदेशालय जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा ने मूँगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की सम्भावनाओं पर प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि मूँगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर दिया। निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ.च वीपी सिंह ने भी विचार रखे। डॉ. रुमाना खान ने संचालन व डॉ. राकेश चौधरी ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक भास्कर पेज नं (12)

मूंगफली की खेती बढ़ाने के लिए कृषि विवि बनाएगा रोडमैप

बीजों की नई प्रजाति चिह्नित कर किसानों को वितरित की जाएंगी

भास्कर न्यूज

झांसी। बुंदेलखंड में मूंगफली की खेती का प्रसार करने के लिए रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विवि रोडमैप तैयार करेगा। इसके लिए आज एक कार्यशाला का आयोजन विवि के कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में किया गया।

इसमें विवि के निदेशक अनुसंधान डॉ एसके चतुर्वेदी ने बताया कि विवि आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिह्नित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा।

इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ एसके बेरा ने मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति दी। निदेशक अनुसंधान ने खेती के मशीनीकरण किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर जोर दिया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन डॉ रुमाना खान ने व आभार प्रदर्शन डॉ राकेश चौधरी ने किया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने दिया।

प्राथमिक

पेयजल

जान

भास्कर न्यूज

अमर उजाला पेज नं० (5)

उन्नतशील प्रजातियों के बीज का करें इस्तेमाल

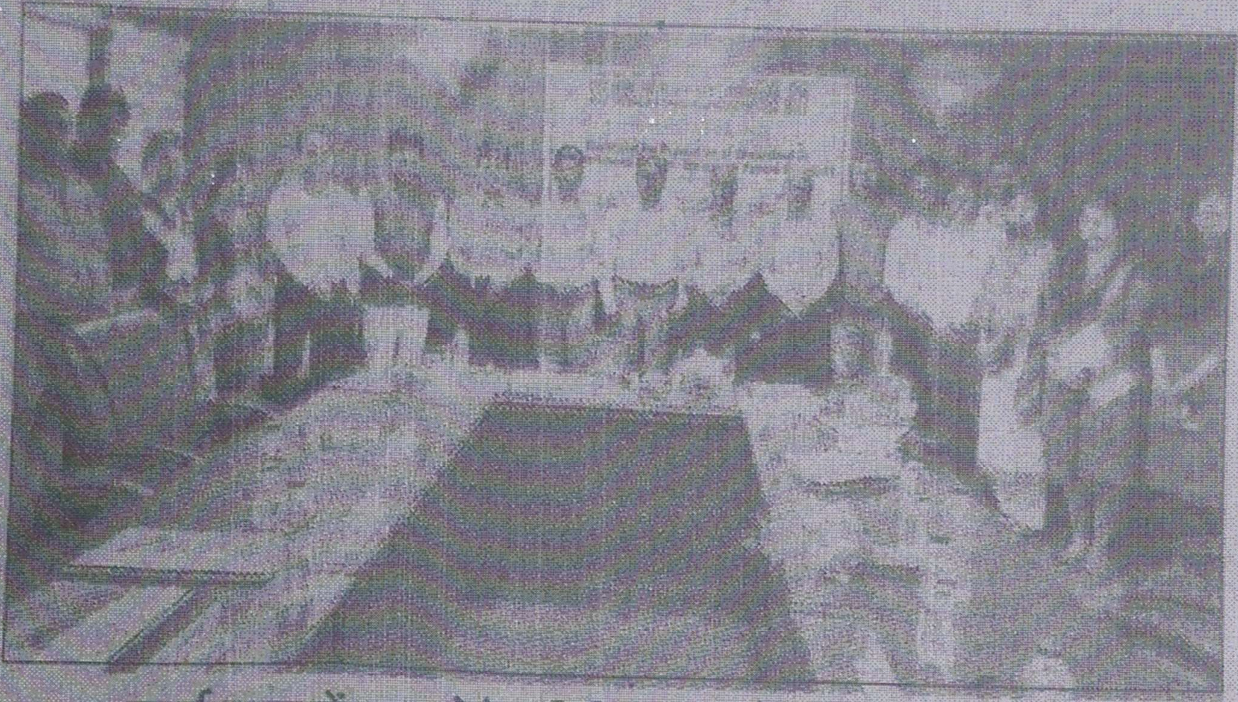

कार्यशाला में भाग लेते अतिथि छात्र-छात्राएं। स्रोत : आयोजक

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन और प्रति एकड़ पैदावार बढ़ाने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला हुई।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके चतुर्वेदी ने उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजो के प्रयोग की बात कही। कहा कि विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिह्नित कर किसानों को बीज उपलब्ध कराएगा।

डॉ. एसके बेरा ने मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर बात रखी।

इस दौरान डॉ. आरके सिंह, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. प्रशांत, डॉ. अंशुमान सिंह मौजूद रहे। ब्यूरो

दैनिक जनप्रिय पेज नं (2)

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

(जनप्रिय संवाददाता)

झांसी। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही । विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा । इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे । डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओ पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूँगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।

दैनिक उद्योग हकीकत पेज नं (7)

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

उद्योग हकीकत, झांसी।

बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही। विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा। इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ गुजरात डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे। डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूंगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।

दैनिक जनहित दर्शन पेज न० (4)

• एक प्रत्याशी नामांकन के अधिकतम चार सेट दाखिल कर सकेगा।

की ओर जाने-आने वाली भारी वाहन मेडिकल बाइपास हो

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

झाँसी। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड मे विगत वर्षो में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए। इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की सम्भावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही। विश्वविद्यालय आगामी वर्षो मे नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा। इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल मे मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा मे निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे । डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओ पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूँगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्मे, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आर-एके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियो के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला मे निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर निदेशक शिक्षा डॉ अनिल कुमार, डॉ प्रशांत जांभुलकर, डॉ अंशुमान सिंह, डॉ शुभा त्रिवेदी, डॉ अनीता पुयाम आदि उपस्थित रहे। संचालन डॉ रुमाना खान व आभार डॉ राकेश चौधरी ने व्यक्त किया।

दैनिक आज पेज नं० (2)

बुंदेलखंड में मूंगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि व अन्य। छाया-आज

(आज समाचार सेवा)

झांसी, 26 अप्रैल। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग की बात कही। विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा। इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे। डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूंगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा।

कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे।

संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।

दैनिक स्वदेश पेज नं (2)

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

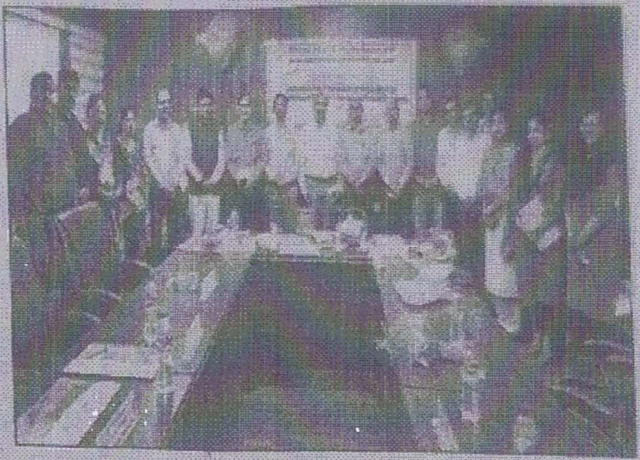

झांसी। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओ के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही । विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा ।इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे । डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूँगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर निदेशक शिक्षा डॉ अनिल कुमार, डॉ प्रशांत जांभुलकर, डॉ अंशुमान सिंह, डॉ शुभा त्रिवेदी, डॉ अनीता पुयाम आदि उपस्थित रहे संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।

दैनिक वीरांगना झाँसी (8)

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

झांसी। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही। विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा। इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे। डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूँगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।

07
दैनिक प्रदेश वॉच पेज नं० (7)

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

(झाँसी ब्यूरो)

झांसी। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुंदेलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च

गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही। विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा। इससे उम्मीद है कि बुंदेलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इ
स चर्चा में निदेशक, मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे। डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूंगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर निदेशक शिक्षा डॉ अनिल कुमार, डॉ प्रशांत जांभुलकर, डॉ अंशुमान सिंह, डॉ शुभा त्रिवेदी, डॉ अनीता पुयाम आदि उपस्थित रहे संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।

दैनिक दबंग बुन्देलखण्ड पेज नं० (4)

बुंदेलखंड में मूँगफली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्यशाला आयोजित

दबंग बुन्देलखण्ड

झांसी। बुदिलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन एवं प्रति एकड़ पैदावार को बढ़ावा देने के लिए हेतु एक दिवसीय चिंतन कार्यशाला का आयोजन आज कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह के निर्देशन में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया। स्वागत भाषण डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने किया। बुदिलखंड में विगत वर्षों में मूंगफली की खेती का काफी प्रसार हुआ है। बुदिलखंड क्षेत्र में मूंगफली के उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रोडमैप कैसे विकसित किया जाए, इसके लिए विचार-मंथन सत्र आयोजित हुआ। मूंगफली के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने की संभावनाओं के बारे में विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके चतुर्वेदी ने विस्तृत चर्चा करते हुए उन्नतशील प्रजातियों और उनके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के प्रयोग कि बात कही । विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में नई प्रजातियों को चिन्हित कर बीज किसानों को उपलब्ध कराएगा । इससे उम्मीद है कि बुदिलखंड में खरीफ तथा बसंत काल में मूंगफली के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी। इस चर्चा में निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ (गुजरात) डॉ. एसके बेरा, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक और उद्यमी उपस्थित रहे । डॉ. एसके बेरा, निदेशक द्वारा मूंगफली की खेती की स्थिति, गुंजाइश और भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। निदेशक अनुसंधान ने बताया कि उपयुक्त प्रजातियों के गुणवत्ता बीजों के प्रयोग तथा पंक्तियों में बुवाई करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा। मूँगफली निर्यात और खाद्य तेल पर निर्भरता कम करने के लिए अलग-अलग शोध करने की आवश्यकता होगी। खेती का मशीनीकरण, खरीफ और गर्मी के मौसम के लिए किस्में, पशु आहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण के रूप में फली के छिलके के उपयोग पर मुख्य जोर दिया गया। कृषि अधिष्ठाता डॉ आरके सिंह ने रोग रोधी नई प्रजातियों के विकास पर जोर देने को कहा। कार्यशाला में निदेशक शिक्षा एवं अधिष्ठाता (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान) डॉ वीपी सिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन डॉ रुमाना खान ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राकेश चौधरी ने किया।